Lecture on Satellite Remote sensing (06 January 2020)

On 6 January 2020 Physics Department of GOVT.V.Y.T.P.G. Autonomous college, DURG organized an interactive session with**Dr. Atul Kumar Varma**, Head and Scientist G, Atmospheric and Oceanic Sciences group, Space Applications Centre, Indian Space Research Organization (ISRO) Ahmedabad, India.With his 32 years of research experience in the area of Satellite Remote Sensing of the oceans and atmosphere.

He talked about his focused areas such as: Satellite Remote sensing and

radiative transfer, Retrieval of Geophysical Parameter using satellite IR and Microwave observations, Remote sensing studies precipitation, Remote sensing studies on Ocean surface winds.He also gave us detailed description of RADARand its Antenna . He also told us his current responsibility that is leading a team that has responsibility of providing algorithms for the retrieval of geophysical parameters from Indian satellite missions for oceans and atmosphere defining sensors for future missions, and developing methods for

generating climate data records. Stage Conduction has been done by M.Sc. (Physics) Pratiksha Tiwari. Student asked several queries about vikram lander failure and Head of department Dr. Purna Bose, Dr. Jagjeet Kaur Saluja, Dr. Anita Shukla Mrs. Siteshwari Chandrakar along with PG students were present.

Photos during Lecture

व्याख्यान साइंस कॉलेज में रिमोट सेंसिंग पर व्याख्याताओं ने रखी अपनी बात, महत्वपूर्ण जानकारियां भी दी

प्राकृतिक संसाधनों को बचाना मानव के लिए बड़ी चुनौती

रिमोट सेंसिंग से हमारा जीवन हुआ आसान और सुविधाजनक

प्राकृतिक संसाधनों को बचाना हर किसी के लिए चुनौती

गर्ल्स कॉलेज में एक भारत, श्रेष्ठ भारत क्लब गठित

दैनिक भास्कर
16-Jan-
Page 4

रिमोट सेंसिंग से हमारा जीवन हुआ आसान और सुविधाजनक : डॉ. वर्मा

सिटी रिपोर्टर | भिलाई

साइंस कॉलेज के भौतिकी विभाग में रिमोट सेंसिंग पर हुई कार्यशाला के मुख्य वक्ता स्पेश एप्लीकेशन सेंटर इसरो से आए डॉ. अतुल वर्मा ने जीपीएस, रिमोट सेंसिंग, रडार, उपग्रह संचार पर अपनी बातें रखीं।

उन्होंने कहा कि रिमोट सेंसिंग दूरस्थ घटनाओं का अवलोकन कर उसकी गतिविधियों की जानकारी देता है। यह विद्युत चुंबकीय विकिरण वाहकों से काम करता है। बादलों को ट्रैक कर मौसम परिवर्तन और चक्रवात आदि के शुरू होते ही प्रभावित क्षेत्रों को सतर्क कर देता है। उन्होंने कहा कि सेंसर का उपयोग युद्ध क्षेत्र में दुश्मनों की गतिविधियों को जानने के लिए करते हैं। कैमरे के उपयोग से उपग्रहों और महासागरों के तापमान परिवर्तन की छवियों को बनाते हैं। इससे जंगल में फैली आग को भी नाप सकते हैं। ग्लोबल प्वाइंटिंग सिस्टम से प्राकृतिक संसाधनों के क्षरण को रोक सकते हैं। उन्होंने भविष्य में समुद्र और वायुमंडल से संबंधित तथ्यों को परिभाषित किया। हमारे दैनिक जीवन को आसान बनाने के लिए रिमोट सेंसिंग उपयोगी है।

प्राकृतिक संसाधनों को जीपीएस से बचा सकते हैं : डॉ. सलूजा

आईक्यूएसी संयोजक डॉ. जगजीत कौर सलूजा ने कहा कि पृथ्वी पर भूमि, जल जंगल आदि प्राकृतिक संसाधनों का क्षरण हो रहा है। उनकी पहचान कर उसको बचाने के लिए तत्पर रहना होगा। प्राकृतिक संसाधनों को बचाना हमारे लिए चुनौतीपूर्ण होने के साथ बहुत आवश्यक है। उन्होंने विद्यार्थियों को इसरो में इंटर्नशिप में सहभागिता देने के लिए प्रेरित किया। व्याख्यान के बाद छात्र-छात्राओं ने सवाल पूछकर अपनी शंकाओं का समाधान किया। इसमें प्राचार्य डॉ. आरएन सिंह, डॉ. पूर्णा बोस, डॉ. अनिता शुक्ला, सीतेश्वरी चंद्राकर, डॉ. अजय सिंह, प्रतीक्षा तिवारी आदि उपस्थित रहे।